अंतरा-शब्दशक्ति

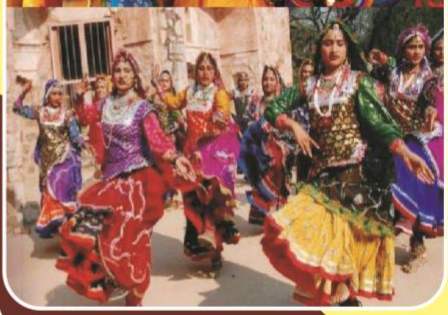

हिन्दी साहित्य, कला और संस्कृति में समन्वय

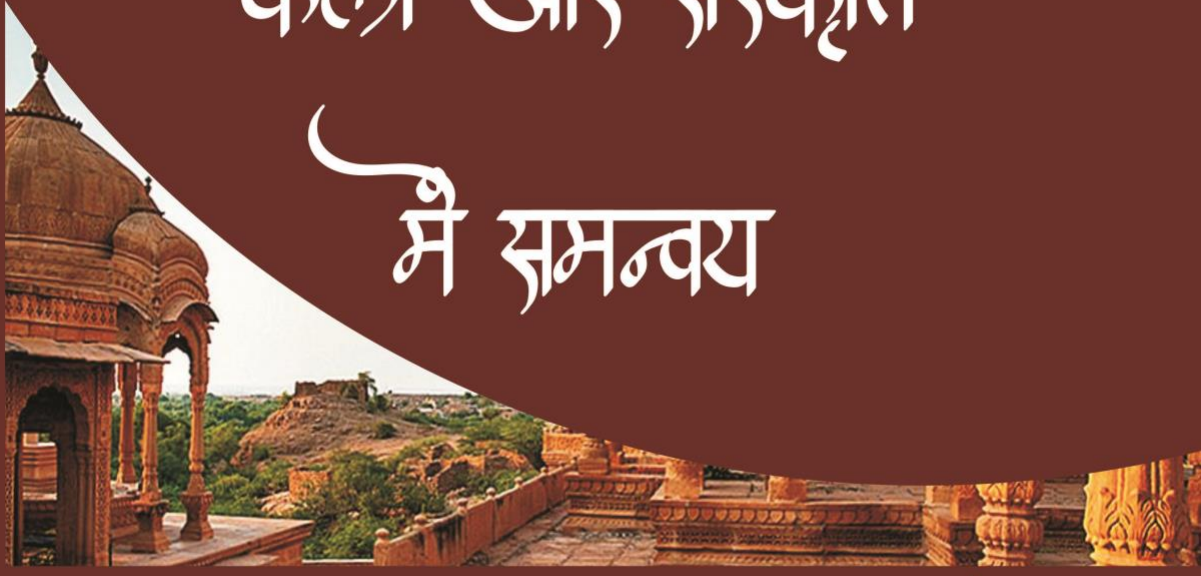

आलेख

वसुंधरा राय

हिन्दी साहित्य, कला और संस्कृति में समन्वय

(आलेख)

वसुंधरा राय

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-43-7

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म,प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म,प्र,) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या,) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail,com

अंतरताना- www,antrashabdshakti,com

प्रथम संस्करण २०१८- वसुंधरा राय

मूल्य - ४०,०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Hindi Sahity, Kala Aur sanskruti me Samanvay by Vasundhara rai

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

हिन्दी साहित्य की ये महिमा ही है जो साहित्कारों की भावनाओं को विचारधाराओं को व्यक्त करने में अतिसक्षम है। हिन्दी साहित्य का इतिहास हज़ारों वर्ष पुराना है हाँ समयानुसार परिवर्तन अवश्य हुए हैं जिसे सभी हिन्दी साहित्य प्रेमियों ने सहज स्वीकार भी किया है। हिन्दी साहित्य,कला, संस्कृति तथा वर्तमान में हिन्दी भाषा का उचित स्थान जैसे गंभीर विषय पर यह मेरी प्रथम पुस्तक है एवं मैने अपनी बुद्धि से जितना समझा उतना इस पुस्तक में लिखा है तथा अपने विचार रखने का मात्र प्रयास किया है।

हिन्दी भाषा को जन-जन की भाषा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह हिन्दी भाषा का ही गौरवमयी गुण है जिसने भारत के अलावा अन्य देशों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है।

यूँ तो भारत में अनेक भाषाएं हैं जो अपने अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं किंतु मात्र हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो क्षेत्रीय भाषाओं के साथ तालमेल बैठाकर अपना महत्व बनाकर जन जन की भाषा बन कर अपनी उपयोगिता दर्ज कर रही है। भारतेंदु युग से लेकर वर्तमान हिन्दी साहित्य पर अपने विचारों को सहज सरल भाषा में लिखने का प्रयास कितना सफल रहा यह तो आने वाला समय ही तय करेगा लेकिन फिर भी मैं अपनी लेखनी के माध्यम से हिन्दी साहित्य पर कला पर व संस्कृति पर समय समय पर कुछ ना कुछ नया करते रहने का संकल्प अवश्य ले रही हूँ तथा हिन्दी भाषा के गौरव के लिए समर्पित भी रहुंगी।

-वसुंधरा राय (लेखिका)

शुभकामना संदेश

सुश्री वसंधुरा राय जी,

हमारे देश की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण आधार नदियाँ, ऋतुएं और कवितायें है और इन्हें हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी संकल्पित करना चाहिए। साहित्य माँ भारती के भाल की वो बिंदी है जिसे चमकाते रहना हर हिन्दुस्तानी का कर्तव्य है। जैसा कि मुझे बताया गया है कि वसंघुरा राय जी का साहित्यिक चिन्तन उच्च कोटि का है, जानकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ इसके साथ ही मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनका लेखन दीर्घकालीन रहे। माँ हिन्दी की सेवा के साथ- साथ वे सामाजिक सेवा में भी संलग्न है मैं अपने हृदय से चाहता हूँ कि माँ सरस्वती का आशिर्वाद सदैव आप पर बना रहे व शक्ति स्वरूपा के आशीर्वाद से आप अपने क्षेत्र में नये आयाम स्पर्श करें। वसुंधरा जी को मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

संस्कृतियों की सदा ही विरासत रहे।
हृदयों पर हिन्दी की ही रियासत रहे।।

आपका

नवीन कुमार

भाजपा, प्रवक्ता दिल्ली

शुभकामना संदेश

सुश्री वसुंधरा राय जी को मैं समाजसेवी, साहित्य सेवी और कलाप्रेमी के रूप में जानता हूँ, चूंकि मैं स्वयं कलाकार हूँ अभिनय क्षेत्र से जुड़ा हुआ व्यक्ति हूँ थोड़ी बहुत साहित्य में भी रूचि रखता हूँ तथा वसुंधरा जी के लेखन में मैने एक परिपक्व साहित्यकार को तो जाना ही है इसके अलावा वे भारत की कला व संस्कृति पर भी समझदारी रखतीं हैं।

भारतीय साहित्य, कला,संस्कृति तथा वर्तमान में हिन्दी की स्थिति पर जिस तरह उन्होंने बेबाकी से अपने विचार रखे हैं वह सराहनीय है जिसकी मैं अपने हृदयतल से प्रसंशा करता हूँ व वसुंधरा जी का अभिनंदन करता हूँ।

मित्र होने के नाते मैं माँ सरस्वती से यही प्रार्थना करता हूँ कि वे लेखन क्षेत्र में सफलमार्ग पर दिन रात चौगनी सफलता ग्रहण करें यही शुभेच्छा।

अभिनेता सागर सैनी

मुख्य बिंदु

*हिन्दी साहित्य,कला और संस्कृति में समन्वय व हिन्दी भाषा का उचित स्थान !

*भारत की अतुलनीय कला

*भारतीय मनीषियों के अनुसार कलाओं की सूची

1.कामसूत्र के अनुसार

2.शुक्रनीति के अनुसार

3.अन्य

*भारतीय साहित्य की वर्तमान की चुनौती

*समाधान

हिन्दी साहित्य,कला और संस्कृति में समन्वय व हिन्दी भाषा का उचित स्थान !

भारत एकमात्र ऐसा देश है सौभाग्य से जहाँ विविध रूप से साहित्य, कला और संस्कृति के दर्शन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक विरासत में प्राप्त होते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक रीति रिवाज़ों तथा परंपराओं तथा विचारों का आदान प्रदान इसमें नीहित हैं। भारतीय साहित्य का इतिहास विलक्षण और अद्यभुत है जिसमें भारत की राजकीय भाषाओं का साहित्यिक जगत में योगदान अतुलनीय माना जाता रहा है व सदैव रहेगा। शताब्दी से हिन्दी साहित्य स्थानीय स्वरूप से विकासशील रहा है तथा भारतीय हिन्दी साहित्य स्वयं में इतना सक्षम है कि लेखक,कवि अपनी लेखनी के माध्यम से एक साधारण व्यक्ति से लेकर असाधारण व्यक्ति की भावनाओं को मोतियों में पिरोकर अपने साथ साथ अन्य मन को स्पर्श की क्षमता रखता है।

लेखक अपनी लेखनी से पाठक को अपने शब्दों के माध्यम से आकर्षित कर हिन्दी साहित्य की गरिमा महिमा मंडित करने की सकुशल क्षमता रखता है।लेखक को समाज का आईना कहा जाए तो यह अतिशोयक्ति नहीं होगी और जब लेखन हिन्दी भाषा में सरल और सहज हो तो जैसे लेखनी को श्रंगारित कर दिया गया हो।यूँ तो हर एक भाषा स्वयं में बहुत खूबसूरत सी है किंतु एक मात्र हिन्दी भाषा ही ऐसी है जिसको सहज सरलता से समझा जा सकता है। हिन्दी भाषा सहज सरल है तथा चिंतन मनन आल्हादित करने वाले साहित्यिक सार्थक सृजन हिन्दी साहित्य के आभूषण हैं जिससे हिन्दी भाषा का सौंदर्यीकरण लेखक अपनी लेखनी से निरंतर करता रहता है। हिन्दी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसे अन्य प्रांतीय लोग भी बड़ी सरलता से सहजता से बोलने व समझने का सामर्थ्य रखते हैं। हिन्दी एक ऐसी भाषा जो सही अर्थों में जन जन को एक सूत्र में बांधकर रखकर माँ स्वरूप अपनी अन्य भाषा बेटियों को एक साथ लेकर चलने का कर्तव्य निर्वहन कर रही है। अन्य प्रांतीय लेखक भी अपनी भाषा के साथ साथ हिन्दी उत्थान को लेकर चिंतन मनन करके रचनात्मक कार्य कर रहें जिससे हमें आशा है कि हिन्दी को वो स्थान अवश्य प्राप्त होगा जिसकी वह सही अर्थ में अधिकार रखती है।

मूलरूप से यदि हिन्दी को समझना है, या हिन्दी साहित्य को समझना है तो सर्वप्रथम हिन्दी शब्द की उत्पत्ति कहाँ से हुई और यह भाषा चलन में कैसे आई यह जानना आवश्यक होगा, सामान्य तौर पर हिन्दी उस बड़े भू भाग की भाषा समझी जाती है, जिसकी सीमा पश्चिम में जैसलमेर उत्तर-पश्चिम में,अम्बाला उत्तर में शिमला पहाड़ी प्रदेश तक पूर्व

में भागलपुर, दक्षिण-पूर्व में रायपुर तथा दक्षिण-पश्चिम में खंडवा तक पहुचती है, संसार का प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद माना जाता है, संभवतः प्राचीन भाषा ऋग्वेद की ही थी, जिसकी वैदिक भाषा संस्कृत थी, संस्कृत दीर्घकाल तक भारत जैसे महान देश की राष्ट्रभाषा रही, काल अनुसार शनै: शनै: संस्कृत भाषा का चलन स्वत ही कम होते- होते प्राकृत भाषा जिसे हम आम बोलचाल की भाषा कहे सकते हैं, का चलन आरम्भ हुआ, बौध्र काल से ही प्राकृत भाषा का उदय हुआ, आज जिसे हम जन- जन की भाषा कहे सकते है, लोकमानस ने भाषा को जन-प्रचलित एवं सहेज रूपो को अपनाना आरम्भ कर दिया, इस नवीन भाषा का नामकरण अपभ्रंश हुआ, इसका निर्णय असंभव सा है कि अपभ्रंश भाषा का प्रचलन कब ख़तम हुआ और हिन्दी शब्द का जन्म कब हुआ। किसी भी भाषा के उत्थान के लिए साहित्य का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान होता है इसी क्रम में हिन्दी के साहित्यकारों ने हिन्दी को अपनी माँ स्वरूप मानकर बड़ी लगन के साथ हिन्दी भाषा की सेवा की। साहित्यिक हिन्दी ने 19वीं शताब्दी तक खड़ी बोली का उस प्रकार चलन नहीं हो पाया था जिसे हम वर्तमान समय में हिंदोस्तान की भाषा या बोली कहते हैं जिसे आपस की बोलचाल की आम भाषा कहते और समझते हैं इसी आम भाषा का सरल सहज उपयोग हिन्दी साहित्य में बखूबी किया गया। यह ऐसा समय था जहाँ हिन्दी गद्य का प्रारंभ ही हुआ था व भारतेंदु हिरिश्चँद्र के साहित्य का सूर्य उदित हो रहा था, भारतेन्दु जी के हिन्दी साहित्य में प्रवेश सामाजिक विषमताओं, राजनैतिक विद्रपताओं के साथ ही एक आदर्श भारतीय परिवेश को भी रेखांकित करने का प्रयास किया जा रहा था तथा वे इसमें सफल भी हुए। विरोधी शैली के दिग्गज साहित्यकार राजा शिवप्रसाद तथा राजा लक्ष्मण सिंह जी के मध्य माध्यम मार्ग प्रशस्त कर समन्वय स्थापित करने का भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के युग को ही जाता है। हिरिश्चँद्र जी के द्वारा १८८३ में लिखित "नाटक" नामक कृति मानी जाती है, इसी दौर में आगे चलकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे रसवादी और समालोचक, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ रामविलास वर्मा 'अज्ञेय', डॉ राम स्वरुप चतुर्वेदी जी ने अपनी लेखनी से हिन्दी को गौरवमयी किया, प्रमुख निबंधकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, महावीर प्रसाद दिवेदी प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनाथ चौधरी 'प्रेमधन', महावीर प्रसाद मिश्र जैसे महान लेखकों ने हिन्दी भाषा को और समर्द्ध कर दिया। माँ हिन्दी के प्रचार में हिरिश्चँद्र जी ने उदन्त मार्तंड और कवि वचन सुधा पत्रिका अग्रणी रहीं। भारतेंदु काल में गद्य, नाटक,निबंध,आलोचना तथा जीवनी आदि अन्य विधाओं में खूब लेखन और प्रचारित रहा। भारतेंदु युग को हिन्दी का स्वर्ण युग कहा जाए तो यह अतिशोयक्ति नहीं होगी क्योंकि इस युग में सर्वाधिक मौलिक रचनाओं से हिन्दी भाषा का सुशोभीकरण किया गया इस युग में मौलिक तथा अनूदित दोनों ही प्रकार के

नाटक लिखे गये। भारतेन्दु युग लेखन के लिए स्वर्णिम युग यूँ ही नहीं कहा गया उनके काल में मौलिक नाटकों में चन्द्रावली, नीलदेवी, भारत-दुर्दशा प्रमुख हैं। अनुदित नाटकों में कुछ बंगला से और कुछ संस्कृत से अनूदित हैं। इस काल में प्रतापनारायण मिश्र ने गौ संकट, कलि प्रभाव, ज्वारी-ख्वारी, हमीर-हठ, राधाकृष्णदास ने महारानी पद्मावती, महाराणा पताप, दुखिनी बाला, बाबू गोकुलचन्द ने बूढ़े मुंह मुहासे, लोग चले तमाशे, आदि नाटक लिखे। श्रीनिवास दास, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास आदि इस काल के अन्य नाटककार हैं।

हमारा प्राचीन साहित्यक संसार किसी भी साहित्य की अपेक्षा कहीं अधिक समृद्ध उत्कृष्ट रहा है, इतिहास गवाह है कि भारत जगदगुरू था। हम विद्या -बुद्धि साहित्य में विश्व के सिरमौर रहे हैं। महान सूरदास,कबीरदास,दादू रामानुज, तुलसीदास जी जैसी महान आत्माओं ने भारत को साहित्यिक जगत में सर्वश्रेष्ठ स्थान से गौरांवित किया। हेमचंद्र, दलपत विजय, नरपति नाल्ह, चंदबरदाई, जी की वीर रस की कविताओं को जिसने भी जिस काल में सुना वह अपने देश पर अपनी जान न्यौछाबर करने को तैयार हो गया। आज भी सीमाओं पर तैनात जवान ऐसी रचनाओं को सुनकर उत्साह और देशभक्ति में डूब जाते हैं।

कविताएं आवश्यक हैं। इसलिए नहीं कि वो दयनीय दौर से गुजर रही हैं, बल्कि इसलिए कि ये काल-परिस्थिति-दशा और दिशा का अपना एक इतिहास प्रदर्शित करती हैं। चाहे काल्पनिक हो किन्तु उसमे समकालीन परिस्थितियों का दर्शन होता है। कविताएं लिखी जाती रहनी चाहिए।

आप ज्यादा इतिहास नहीं लिख सकते, न ही पढ़ सकते हैं किंतु कविता के माध्यम से इतिहास समझ सकते हैं। वरिष्ठ पत्रकार लेखक अमिताभ श्रीवास्तव जी (मुंबई) के कथनानुसार, "कविता कैसी हो? किस तरह लिखी जाए? ये विषय काव्य पंडितों के लिए रहने दीजिए,,, आलोचना, मख़ौल उड़ाना आदि इत्यादि से दूर कविताएं रची जाएं, रची जाती रहे,,,, क्योंकि वो समय का अहसास दिलाती हैं,, क्योंकि वो जीवन की डायरी होती हैं। आपके लिए भी और पाठक के लिए भी। क्या आपको पता है इतिहास, खास कर मध्य-युगीन व प्राचीन इतिहास के बारे में जानकारी इकट्ठा करने का सबसे बड़ा स्रोत हैं उस युग में लिखी गयी कविताएं। रामायण, महा-भारत, स्मृतियाँ, अभिज्ञानशाकुंतलम, साम्स इसके अलावा मध्य युग में दोहे आदिपद्मावत,सूरसागर,रामचरितमानस।

क्या ये नहीं लगता कि पूर्वलिखित कविताएं इतिहास के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान करती हैं। समकालीन युग के लिए एक दर्पण का काम करती हैं ये कविताएं। साथ ही कई अन्य ऐसी कवितायेँ भी हैं, जो इतिहास के लिए एक साफ रास्ता प्रस्तुत करती हैं। कितनी भी कल्पनीय हो फिर भी ये कविताएं उस युग के लोगों के रहन-सहन के बारे में दर्शाती ही हैं"।

लिहाजा कविता इतिहास को अधिक से अधिक और वो भी सहजता से जानने-समझने का एक रास्ता होती हैं। प्रेमचंद युग में प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य जगत को शिखर के नये आयाम दिए जिसके लिए लिए हिन्दी साहित्य सदैव ऋणी रहेगा। वर्तमान में हिन्दी भाषा को और सबल बनाने के लिए अन्य भाषाओं के सभी साहित्कारों को हिन्दी भाषा के प्रति कर्मठ दृढ़ता से कार्यरत देख कर हिन्दी मन आशांवित है कि आगे आने वाला समय हिन्दी को ही समर्पित हो सकता है।

भारत की अतुलनीय कला

स्वभाववश जिसकी भावनात्मक पृवत्ति होती है वह अपनी भावनाओं को रंगों की दुनिया मे ले जाकर चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्ति कर लेता है। भारत चित्रकला में भी विश्व में अपनी अलग पहचान और श्रेष्ठ स्थान रखता है।

यही विशेष पृवत्ति उस व्यक्ति की विशेषता दर्शाता है तथा यही उसकी आत्माभित्यंजना है।

एक चित्रकार जिस तरह अपनी कल्पना को रंगो के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता है वह आश्चर्यजनक है।

अजंता की गुफाओं की चित्रकारी अतभुत है। जिसे कोई भी कलाप्रेमी कभी भुला नहीं सकते ठीक उसी प्रकार आदिमानवों ने भी जिस तरह अपने जीवन के संघर्ष को दिवारों पर उकेरा है वह भी अतुलनीय है।

भारतीय मनीषियों के अनुसार कलाओं की सूची

कामसूत्र के अनुसार

"कामसूत्र" के अनुसार 64 कलाएँ निम्नलिखित हैं : (1)गायन, (2) वादन, (3) नर्तन, (4) नाट्य, (5) आलेख्य (चित्र लिखना), (6) विशेषक (मुखादि पर पत्रलेखन), (7) चौक पूरना, अल्पना, (8) पुष्पशय्या बनाना, (9) अंगरागादि लेपन, (10) पच्चीकारी, (11) शयन रचना, (12) जलतंरग बजाना (उदक वाद्य), (13) जलक्रीड़ा, जलाघात, (14) रूप बनाना (मेकअप), (15) माला गूँथना, (16) मुकुट बनाना, (17) वेश बदलना, (18) कर्णाभूषण

बनाना, (19) इत्र या सुगंध द्रव बनाना, (20) आभूषण धारण, (21) जादूगरी, इंद्रजाल, (22) असुंदर को सुंदर बनाना, (23) हाथ की सफाई (हस्तलाघव), (24) रसोई कार्य, पाक कला, (25) आपानक (शर्बत बनाना), (26) सूचीकर्म, सिलाई, (27) कलाबत्, (28) पहेली बुझाना, (29) अंत्याक्षरी, (30) बुझौवल, (31) पुस्तक वाचन, (32) काव्य-समस्या करना, नाटकाख्यायिका-दर्शन, (33) काव्य-समस्या-पूर्ति, (34) बेंत की बुनाई, (35) सूत बनाना, तुर्क कर्म, (36) बढ़ईगिरी, (37) वास्तुकला, (38) रत्नपरीक्षा, (39) धातुकर्म, (40) रत्नों की रंग परीक्षा, (41) आकर ज्ञान, (42) बागवानी, उपवन विनोद, (43) मेढ़ा, पक्षी आदि लड़वाना, (44) पक्षियों को बोली सिखाना, (45) मालिश करना, (46) केश-मार्जन-कौशल, (47) गुप्त-भाषा-ज्ञान, (48) विदेशी कलाओं का ज्ञान, (49) देशी भाषाओं का ज्ञान, (50) भविष्य कथन, (51) कठपुतली नर्तन, (52) कठपुतली के खेल, (53) सुनकर दोहरा देना, (54) आशुकाव्य क्रिया, (55) भाव को उलटा कर कहना, (56) धोखाधड़ी, छलिक योग, छलिक नृत्य, (57) अभिधान, कोशज्ञान, (58) नकाब लगाना (वस्त्रगोपन), (59) द्यूतविद्या, (60) रस्साकशी, आकर्षण क्रीड़ा, (61) बालक्रीड़ा कर्म, (62) शिष्टाचार, (63) मन जीतना (वशीकरण) और (64) व्यायाम।

शुक्रनीति के अनुसार

"शुक्रनीति" के अनुसार कलाओं की संख्या असंख्य है, फिर भी समाज में अति प्रचलित 64 कलाओं का उसमें उल्लेख हुआ है। "शुक्रनीति" के अनुसार गणना इस प्रकार है:- (1)नर्तन (नृत्य), (2) वादन, (3) वस्त्रसज्जा, (4) रूप परिवर्तन, (5) शैय्या सजाना, (6) द्यूत क्रीड़ा, (7) सासन रतिज्ञान, (8) मद्य बनाना और उसे सुवासित करना, (9) शल्य क्रिया, (10) पाक कार्य, (11) बागवानी, (12) पाषाणु, धातु आदि से भस्म बनाना, (13) मिठाई बनाना, (14) धात्वौषधि बनाना, (15) मिश्रित धातुओं का पृथक्करण, (16) धातु मिश्रण, (17) नमक बनाना, (18) शस्त्र संचालन, (19) कुश्ती (मल्लयुद्ध), (20) लक्ष्य वेध, (21) वाद्य संकेत द्वारा व्यूह रचना, (22) गजादि द्वारा युद्धकर्म, (23) विविध मुद्राओं द्वारा देव पूजन, (24) सारथ्य, (25) गजादि की गति शिक्षा, (26) बर्तन बनाना, (27) चित्रकला, (28) तालाब, प्रासाद आदि के लिए भूमि तैयार करना, (29) घटादि द्वारा वादन, (30)रंगसाजी, (31)भाप के प्रयोग-जलवाटवग्नि संयोगनिरोधै: क्रिया, (32) नौका, रथादि यानों का ज्ञान,

(33) यज्ञ की रस्सी बाटने का ज्ञान, (34) कपड़ा बुनना, (35) रत्न परीक्षण, (36) स्वर्ण परीक्षण, (37) कृत्रिम धातु बनाना, (38) आभूषण गढ़ना, (39) कलई करना, (40) चर्मकार्य, (41) चमड़ा उतारना, (42) दूध के विभिन्न प्रयोग, (43) चोली आदि सीना, (44) तैरना, (45) बर्त्तन माँजना, (46) वस्त्र प्रक्षालन (संभवत: पालिश करना), (47) क्षौरकर्म, (48) तेल बनाना, (49) कृषिकार्य, (50) वृक्षारोहण, (51) सेवा कार्य, (52) टोकरी बनाना, (53) काँच के बर्त्तन बनाना, (54) खेत सींचना, (55) धातु के शस्त्र बनाना, (56) जीन, काठी या हौदा बनाना, (57) शिशुपालन, (58) दंडकार्य, (59) सुलेखन, (60) तांबूलरक्षण, (61) कलामर्मज्ञता, (62) नटकर्म, (63) कलाशिक्षण और (64) साधने की क्रिया।

अन्य

वात्स्यायन के "कामसूत्र" की व्याख्या करते हुए जयमंगल ने दो प्रकार की कलाओं का उल्लेख किया है - (1) कामशास्त्र से सम्बन्धित कलाएँ, (2) तंत्र सम्बन्धी कलाएँ। दोनों की अलग-अलग संख्या 64 है। काम की कलाएँ 24 हैं जिनका सम्बन्ध सम्भोग के आसनों से है, 20 द्यूत सम्बन्धी, 16 कामसुख सम्बन्धी और 4 उच्चतर कलाएँ। कुल 64 प्रधान कलाएँ हैं। इसके अतिरिक्त कतिपय साधारण कलाएँ भी बतायी गयी हैं। प्रगट है कि इन कलाओं में से बहुत कम का सम्बन्ध ललित कला या फ़ाइन आर्ट्स से है। ललित कला अर्थात् चित्रकला, मुर्त्तिकला आदि का प्रसंग इनसे भिन्न और सौंदर्यशास्त्र से सम्बन्धित है।

यही नहीं भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं की खुश्बू की महक आज भी अपनी प्राचीन परम्परा से समृद्ध है। जिस प्रकार आदिकाल से अब तक मानव जीवन का इतिहास क्रमबद्ध नहीं मिलता उसी प्रकार कला का भी इतिहास क्रमबद्ध नहीं है, परन्तु यह निश्चित है कि सहचरी के रूप में कला सदा से ही साथ रही है। लोक कलाओं का जन्म भावनाओं और परम्पराओं पर आधारित है क्योंकि यह जनसामान्य की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान शास्त्रीय और व्यावसायिक कला की पृष्ठभूमि भी है। भारतवर्ष में पृथ्वी को धरती माता कहा गया है। मातृभूति तो इसका सांस्कृतिक व परिष्कृत रूप है। इसी धरती माता का श्रद्धा से अलंकरण करके लोकमानव में अपनी आत्मीयता का परिचय दिया। भारतीय संस्कृति में धरती को विभिन्न नामों से अलंकृत किया जाता है। गुजरात में “साथिया” राजस्थान में “माण्डना”, महाराष्ट्र में “रंगोली” उत्तर प्रदेश में “चौक पूरना”, बिहार में “अहपन”, बंगाल में “अल्पना” और गढ़वाल में “आपना” के नाम से प्रसिद्ध है। यह कला धर्मानुप्रागित भावों से प्रेषित होती है; जिसमें श्रद्धा से रचना की जाती है। विवाह

और शुभ अवसरों में लोककला का विशिष्ट स्थान है। द्वारों पर अलंकृत घड़ों का रखना, उसमें जल व नारियल रखना, वन्दनवार बांधना आदि को आज के आधुनिक युग में भी इसे आदरभाव, श्रद्धा और उपासना की दृष्टि से देखा जाता है।

आज भारत की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण "ताजमहल" है, जिसने विश्व की अपूर्व कलाकृत्तियों के सात आश्चर्य में शीर्षस्थ स्थान पाया है। लालकिला, अक्षरधाम मन्दिर, कुतुबमीनार, जामा मस्जिद भी भारतीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण रही है। मूर्त्तिकला, समन्वयवादी वास्तुकला तथा भित्तिचित्रों की कला के साथ-साथ पर्वतीय कलाओं ने भी भारतीय कला से समृद्ध किया है।

सत्य, अहिंसा, करुणा, समन्वय और सर्वधर्म समभाव ये भारतीय संस्कृति के ऐसे तत्त्व हैं, जिन्होंने अनेक बाधाओं के बीच भी हमारी संस्कृति की निरन्तरता को अक्षुण्ण बनाए रखा है। इन विशेषताओं ने हमारी संस्कृति में वह शक्ति उत्पन्न की है कि वह भारत के बाहर एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया में अपनी जड़े फैला सके।

हमारी संस्कृति के इन तत्त्वों को प्राचीन काल से लेकर आज तक की कलाओं में देखा जा सकता है। इन्हीं ललित कलाओं ने हमारी संस्कृति को सत्य, शिव, सौन्दर्य जैसे अनेक सकारात्मक पक्षों को चित्रित किया है। इन कलाओं के माध्यम से ही हमारा लोकजीवन, लोकमानस तथा जीवन का आंतरिक और आध्यात्मिक पक्ष अभिव्यक्त होता रहा है, हमें अपनी इस परम्परा से कटना नहीं है अपितु अपनी परम्परा से ही रस लेकर आधुनिकता को चित्रित करना है।

80 से अधिक पत्र पत्रिकाओं में निरंतर लेखन करने वाली विदुषी इंदिरा किसलय जी के अनुसार*, "भाषा वो मंजूषा है जिसमें संस्कृति संरक्षित होती है और सुरक्षित भी।संस्कृति अर्थात् समग्र जीवन शैली जो समयानुरूप साहित्य एवं कलाओं में प्रतिबिंबित होती है।इसमें लोक जीवन के विविध पहलू यथा खानपान, परिधान, चित्रकला, साहित्य, संगीत, पूजापाठ, शिल्प तथा दर्शन आदि का सौंदर्य उजागर होता है।"साहित्य हर पहलू को शब्दों में बाँधता है। तीनों में एक ही अन्तर्धारा प्रवाहित है। मौजूदा परिवेश में तीनों की अन्तर्गत "लय" बाधित हो रही है। भाषायी अस्मिता खतरे में है। मानवीय संवेदना खोती जा रही है। ऐसे में साहित्यकार, कलाकार एवं संस्कृति के झंडाबरदारों को अपनी भूमिका के पुनरीक्षण की जरूरत है।

दीप्ति वि, कुशवाह साहित्यकार एवं प्रभारी डीबी इम्प्रेशन्स, दैनिक भास्कर जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "साहित्य, कला एवं संस्कृति किसी भी जीवित समाज

और राष्ट्र की मौलिक पहचान, उसकी शक्ति और वास्तविक समृद्धि का परिचायक होती हैं। मानव जीवन में कला, साहित्य और संस्कृति का वही स्थान है जो फूलों में सुगंध का या जीवन में प्राण का होता है। संस्कृति से समाज और समाज से व्यक्ति, नाभिरज्जु की तरह जुड़ा रहता है। इन तीनों का संतुलित समन्वय व्यक्ति को व्यक्तित्व और जीवन को सार्थकता देता है। साहित्य, कला एवं संस्कृति व्यक्ति और राष्ट्र के सार्वभौमिक उत्थान के आवश्यक उपकरण हैं।''

आज के 71 वर्ष बाद भी हिन्दी राष्ट्रीय भाषा क्यों नहीं बन पायी? हमारे प्रिय बापू जी महात्मा गाँधी जी ने भारत के विकास में भाषा के योगदान के महत्व को समझते हुए यह तर्क रखा था कि जिस देश की आम जनता अपनी दैनिक दिनचर्या में जिस भाषा का सर्वाधिक प्रयोग करती है वह भाषा मात्र हिन्दी ही है, यह ही एक ऐसी भाषा है जो देश के भीतर ही नहीं अपितु देश के बाहर भी बोली जाती है। हिन्दी भाषा को सर्वाधिक बोलने चालने की आम जनता से भाषा कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज़ाद भारत में जब संविधान लागू हुआ तब यह आश्वासन दिया गया था कि अंग्रेजी भाषा का प्रवधान कुछ समय तक ही रहेगा ताकि हिन्दी भाषा का ज्ञान और चलन विस्तार पूर्वक देश भर में हो सके। लेकिन नौकरशाही में हिन्दी का प्रचलन शासन सही दिशा में कदम उठा नहीं सका। ठीक इसके विपरीत अंग्रेजी भाषा का प्रचलन प्रचूर प्रचार किया गया। यह अपनेआप में बड़ा प्रश्न है कि आज़ादी के 71 वर्ष बाद भी हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा घोषित क्यों नहीं कर सके ?

2017 की दक्षिण भारत की व्यक्तिगत यात्रा के आधार पर कहा जा सकता है कि वहाँ की जन साधारण जनता को हिन्दी भाषा में बात करने से कोई परहेज़ नहीं, दक्षिण भारतीय की आम जनता हिन्दी फिल्मी गीतों का,पिक्चर का ठीक वैसे ही आनंद लेते हैं जैसे कोई उत्तर भारतीय लेता है। यहाँ यह कहना अतिश्योक्ति नहीं कि जनप्रतिनिधियों के निज स्वार्थ के कारण व भाषा पर राजनीतिकरण के कारण हिन्दी भाषा साहित्यिक भाषा तक ही सिमट कर रह गयी है। स्व० डॉ० राममनोहर लोहिया ने जब अंग्रेजी भाषा हटाओ का आंदोलन किया तब हिन्दी के साथ-साथ देश की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को आपसी संबंध से जोड़ कर बताया था, उन्होंने कहा था कि हिन्दी सब क्षेत्रीय भाषाओं की बड़ी बहन स्वरूप है, उन्होंने भाषाओं को पवित्र बंधन में बांध कर एक सूत्र में लाने का प्रयास किया। उस समय लोहिया जी ने एक नारा भी दिया था कि अंग्रेजी में काम ना होगा फिर देश गुलाम ना होगा। उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा के कारण गरीबों के अधिकारों का शोषण होता है,वे मानते रहे कि दफ्तरी कार्य यदि हिन्दी भाषा व क्षेत्रीय भाषा में हों तो जन

साधारण को उचित लाभ प्राप्त होगा किंतु वर्तमान समय की विडंबना यही है कि आज अधिकांश दफ्तरों में अंग्रेजी भाषा का ही बोलबाला है। पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषा के बाद हिन्दी ही मात्र ऐसी भाषा है जो सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। अपने ही देश में राजनैतिक इच्छा शक्ति के अभाव में आज हिन्दी भाषा साहित्यिक भाषा तथा बोलचाल की भाषा ही बनकर रह गयी है।

हिन्दी भाषा आशांवित है।

हिन्दी वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में भी अपनी पहचान बना रही है जिसका सबसे बड़ा कारण यही है कि दुनिया के कोने कोने में भारतीयों का बस जाना जिससे भारतवासी हिन्दी के माध्यम से दुनियाभर से जुड़कर हिन्दी भाषा का स्वभाविक रूप से प्रचार कर रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों से इंटरनेट के माध्यम से भी हिन्दी भाषा का प्रयोग और बढती लोकप्रियता से भी सिद्ध हो रही रहा है कि हिन्दी आज जन जन की भाषा बन चुकी है। लगभग 30 से 40 प्रतिशत लोग इंटरनैट पर हिन्दी से जुड़ी जानकारी प्राप्त कर अपना कार्य करते हैं। बेबसाइट, ब्लॉग, बेब पोर्टल आदि के माध्यम से भी हिन्दी भाषा का रुचि के साथ प्रयोग किया जा रहा है। जिससे हिन्दी भाषा प्रचार आशांवित है।

भारतीय साहित्य की वर्तमान की चुनौती

भारत को आज़ाद हुए इकहत्तर वर्ष बीत चुके हैं लेकिन मानसिक गुलामी की बेड़ियां आज भी हमें कहीं ना कहीं जकड़े हुए हैं, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति का सम्मान करना भूल सा गये हैं, स्वर्णिम साहित्यिक अतीत, सांस्कृतिक पर हमें गर्व करना चाहिए लेकिन यह कहना अतिशोक्ति नही होगी कि आधुनिकता के भाव में इसका अभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। अंग्रेजी भाषा का अनावयश्यक प्रयोग से वर्तमान हिन्दी साहित्य डगमगाती हुई सी दिखती है। युवाओ को लिखने में तो रूचि है किंतु भाषा का ज्ञान न होने के कारण हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। युवा साहित्यकार विचलित है व कहीं कहीं भ्रमित है, इंटरनैट के युग में मात्राओं का उचित प्रयोग होते नहीं दिखता। आज का युवा हिन्दी के प्रति समर्पण भाव नहीं रखता, किस तरह से भारत की युवा पीढ़ी को हिन्दी, साहित्य अपनी संस्कृति से जोड़ कर रखा जाए वर्तमान में यह एक चुनौती है।

समाधान

यदि युवाओं को हिन्दी भाषा, संस्कृति से जोड़े रखना है तो साहित्य के अलावा इसी क्षेत्र में रोज़गार भी उपलब्ध कराने होंगे। रूचि क्षेत्र में कार्य करते हुए यदि जीविका

का भी प्रबंध किया जाए तो आज जिन युवाओं को हिन्दी भाषा, कविता कहानियों में रूचि है वे अवश्य टिके रहेंगे।

समस्या है तो निश्चित समाधान भी ढूंढना होगा। छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा व्यक्ति जब हिन्दी में काम करेगा तो देश का स्वाभिमान बढ़ेगा और युवाओं में भविष्य के प्रति आशाएं जाग्रत होगीं। अंग्रेजी भाषा का विरोध नहीं है किंतु अंग्रेजी के कारण हिन्दी उपेक्षित न हो यह विचार भी करना होगा। आज के युवाओं के सामर्थ्य पर शंका नहीं की जा सकती लेकिन वह अपने सामर्थ्य को हल्के-फुल्के शब्दों से कोई भी भाव रच तो देता है किंतु प्रभाव छोड़ने में असफल हो जाता है, संघर्ष नहीं करना चाहते तथा शीघ्र से शीघ्र साकारात्मक परिणाम भी चाहते हैं कभी कभी अतिशिघ्रता वश परिणाम मनानुसार नहीं आने पर निराशा से घिर जाते हैं ऐसी स्थिति में विचार करना होगा कि समस्या विशालकाय ना हो जाए इसके लिए समय समय पर वरिष्ठ साहित्यकारों को युवा लेखकों के लिए साहित्यिक प्रशिक्षण व कार्यशाला का आयोजन करते रहना चाहिए साथ ही साथ व्याकरण संबंधित उचित मार्गदर्शन करते रहना चाहिए। साहित्य के माध्यम से रूचि अनुसार जीविका का साधन कैसे जुटाएं, शिखर के मार्ग पर एक साहित्यकार में क्या क्या विशेषता होनी चाहिए तथा स्वयं को एक अच्छा साहित्यकार कैसे बनाएं समय समय पर अवश्य अवगत कराना चाहिए। भारत सरकार साहित्यिक क्षेत्र में क्या क्या कर रही है इन सबकी जानकारी भी देते रहना चाहिए।

वरिष्ट साहित्यकारों को अपनी आने वाली पीढ़ी के साथ यह ईमानदारी रखनी पड़ेगी क्योंकि साहित्यकार अपने समय का प्रतिबिंब होता है।

नोवल पुरुस्कार विजेता गुन्नार मिर्डल जैसे अर्थशास्त्री ने भारत भ्रमण के समय कहा था कि, भारत को गरीबी दूर करने में तब सफलता मिलेगी जब यहाँ देसी भाषा,आम भाषा,सबको अपननाने वाली भाषा सर्वाधिक बोले जानी भाषा में अर्थात हिन्दी भाषा में कार्य होने लगेंगे। इस दृष्टिकोण पर भी अवश्य विचार करना होगा।

वसंधुरा राय

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - वसुंधरा राय
जन्म - 31 जनवरी 1977
माताजी - श्रीमती विद्या भट्टाचार्य
पिताजी - स्व.श्री रमेशचन्द्र भट्टाचार्य
पति - श्री प्रतीक विश्वनाथ राय
शिक्षा - एम.ए. समाजशास्त्र, पत्रकारिता मास्टर डिप्लोमा (मुम्बई के.सी. कॉलेज)
पता - गोकुल हरे कृष्णा अपार्टमेंट, फ्लैट नं. 103, क्लार्क टाऊन, कड़वीचौक के पास नागपुर 440013 (महाराष्ट्र)
मो. - 9623692255
विधा - छंद मुक्त कविता, लघुकथा, दोहा छंद, अध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक विषयों पर लेख, वर्तमान में सामाजिक सेवा में संलग्न।
अनुभव - 2008 में मेरी सहेली राष्ट्रीय हिंदी मैगजीन में फीचर राईटर पदासीन। प्रतिष्ठित राजनैतिक, अध्यात्मिक और फिल्मी हस्तियों का साक्षात्कार।
प्रकाशन - गृहलक्ष्मी, दैनिक ग्वालियर, नवभारत समाचार पत्र, दैनिक तरुण भारती समाचार पत्र, दैनिक कामयाब कलम राजस्थान, दैनिक लोकजंग समाचार पत्र, दैनिक लोकमत समाचार पत्र महाराष्ट्र, दैनिक ख़बर वाहक, दैनिक सीमांत रक्षक समाचार पत्र राजस्थान, दैनिक भास्कर समाचार पत्र जैसे अनेको पत्रों मे लेख कविताओं का प्रकाशन।
- साँझा प्रकाशन - अपूर्वा (गीत संग्रह), हाइकु विशेषांक, मेरी सांसे तेरा जीवन - पर्यावरण पर दोहे, झाँकता चाँद-हाईकु संग्रह, अभिव्यक्ति के स्वर- लघुकथा संग्रह, तेरे मेरे शब्द - काव्य संग्रह (सभी सांझा संकलन में प्रकाशित)
सुनो ज़रा धीरे चलो ना (कविता संग्रह)
सम्मान - अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018, अर्णव काव्य रत्न अलंकार, व्रत प्रतिष्ठान सम्मान, हाइकु मंजुषा रत्न सम्मान (छत्तीसगढ़), राज्य स्तरीय हाइकु सम्मान तथा साहित्यिक सृजन सम्मान। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजन करवाने का गौरव प्राप्त ..।

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-43-7
मूल्य- 40/-